हिमालय में सुरंग बांधों के खतरे व विकल्प

भारत डोगरा

हिमालय में व विशेषकर उत्तराखंड में पनबिजली उत्पादन के लिए बहुत से सुरंग बांध बनाए जा रहे हैं। उदाहरण के लिए गंगोत्री से कुछ ही आगे चलकर भागीरथी नदी पर ऐसी परियोजनाओं का सिलसिला शुरू हो जाता है जिनमें से कुछ प्रस्तावित हैं, कुछ निर्माणाधीन हैं तो कुछ पूरी हो चुकी हैं। यदि इन परियोजनाओं को एक समग्र रूप में देखा जाए, तो नदी एक सुरंग से निकल कर दूसरी सुरंग में पहुंच जाएगी व इस तरह दूर-दूर तक नदी का प्राकृतिक बहाव समाप्त हो जाएगा।

इन परियोजनाओं के पीछे सोच तो यह है कि नदियों के पानी को सुरंगों से गुज़ारकर अनुकूल स्थान पर आउटलेट बनाकर टर्बाइन चलाई जाएंगी व मूल्यवान पनबिजली का उत्पादन किया जाएगा। पर विभिन्न कंपनियों द्वारा विभिन्न स्थानों पर ऐसी परियोजनाएं स्थापित करने की जल्दबाज़ी में इनमें पर्यावरण, जैव-विविधता व स्थानीय जन जीवन पर दुष्परिणामों को पूरी तरह नज़रअंदाज़ कर दिया गया है।

हाल ही में उत्तराखंड के अनेक प्रभावित गांवों का दौरा करने पर पता चला कि यहां का जन जीवन इन परियोजनाओं से बहुत बुरी तरह प्रभावित हुआ है। भागीरथी नदी के किनारे पर बसे ढिकोली गांव (जिला उत्तरकाशी) के लोगों ने बताया कि मनेरी भाली फेस II परियोजना से उनकी खेती, चारागाह एवं जंगल उजड़ गए हैं। भारी निर्माण कार्यों के लिए हुए विस्फोटों से उनके घरों में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गई हैं व अनेक लोगों को आवास छोड़ने पड़े हैं। इसका कोई मुआवजा भी नहीं मिला है। गांव का मुख्य जल स्रोत भी सूख गया है। इसी नदी के किनारे स्थित पाला गांव में परियोजना के लिए हुए विस्फोटों के बाद लगभग 150 भू-स्खलनों की शिकायत प्राप्त हुई है।

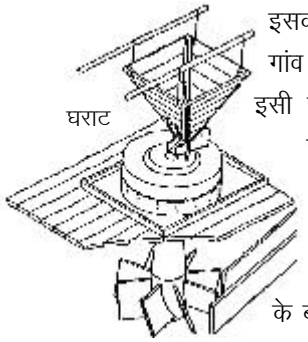

घराट

भिलंगना नदी पर बनी परियोजना के बारे में फिलेंडा गांव और आसपास के आंदोलनकारियों ने बताया कि इस परियोजना से उनके गांव की खेती व सिंचाई बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई है। भूकंप के ज़ोखिम से ग्रस्त क्षेत्र में बनी इस परियोजना के बारे में लोगों का कहना है कि विस्फोटों से उनके घर क्षतिग्रस्त होते हैं व घरों के नीचे से सुरंग गुज़ार दी जाती है तो भूकंप के दौरान क्षति की संभावना बहुत बढ़ जाती है। पिछले भूकंप के दौरान सबसे अधिक मौतें जामक (ज़िला उत्तरकाशी) जैसे उन गांवों में हुई थी जिन्होंने बड़ी संख्या में विस्फोट झेले थे।

भागीरथी घाटी की कई महिलाओं ने बताया कि एक ओर तो कुछ महीनों में नदी में पानी बहुत कम रह जाता है, वहीं अचानक वेग से छोड़े गए पानी के कारण नहा रहे या नदी पार कर रहे लोगों के बह जाने का खतरा रहता है।

नदी का पानी मोड़ने में व कुछ स्थानों पर पानी बहुत कम रह जाने से मछलियों व जलीय जीवों के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो गया है। बहुत सी मछलियां मर गई हैं। उनके प्रजनन व प्रवास का चक्र गड़बड़ा गया है।

गौरतलब है कि जल-ऊर्जा का परंपरागत उपयोग घराट के माध्यम से लोग इस तरह आटा पीसने के लिए करते थे जिसमें पर्यावरण व जन जीवन की कोई क्षति नहीं होती थी। अब कुछ स्थानों पर इसमें थोड़ा बदलाव कर छोटे स्तर की पनबिजली का उत्पादन भी हो रहा है।

उत्तरकाशी के पास हमने एक ऐसा प्रयास देखा जिसमें एक छोटी-सी नदी से निकली नहर के पानी को मोड़कर टर्बाइन चलाने की व्यवस्था की गई थी। इस तरह प्राप्त बिजली से आगे कुटीर उद्योग चलाने की व्यवस्था थी। बूढ़ा केदार जैसे अन्य क्षेत्रों में भी ऐसे प्रयोग हुए हैं। नदियों से निकली गूली-नहरों पर इस तरह का छोटे स्तर का बिजली उत्पादन नदी के प्राकृतिक बहाव से हानिकारक छेड़छाड़ के बिना किया जा सकता है। अतः इस तरह के विकल्पों पर विचार करना ज़रूरी है। ***(स्रोत फीचर्स)***